वर्ष-3 अंक : 27
सहयोग शुल्क : रु.1 | मार्च : 2019

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

दिव्यांग सेतु

संपादक : - संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

गुजरात के दिव्यांग सशक्तिकरण विभाग ने बनाया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड पृष्ठ : ४
दस मिनट देश के लिए : प्रशांत वाला पृष्ठ : ६
स्पर्श शाह: ईश्वर का मिडास टच पृष्ठ : ८

थावरचंद गहलोत,
केन्द्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री,
भारत सरकार

जीवन में जीतने का सही अर्थ ये सीखना है कि कैसे खुश और संतुष्ट रहें

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

हर दिव्यांग एक आर्टिस्ट है, क्योंकि ईश्वर ने उनको दूसरे हाथ से बहोत कुछ बक्षा है

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

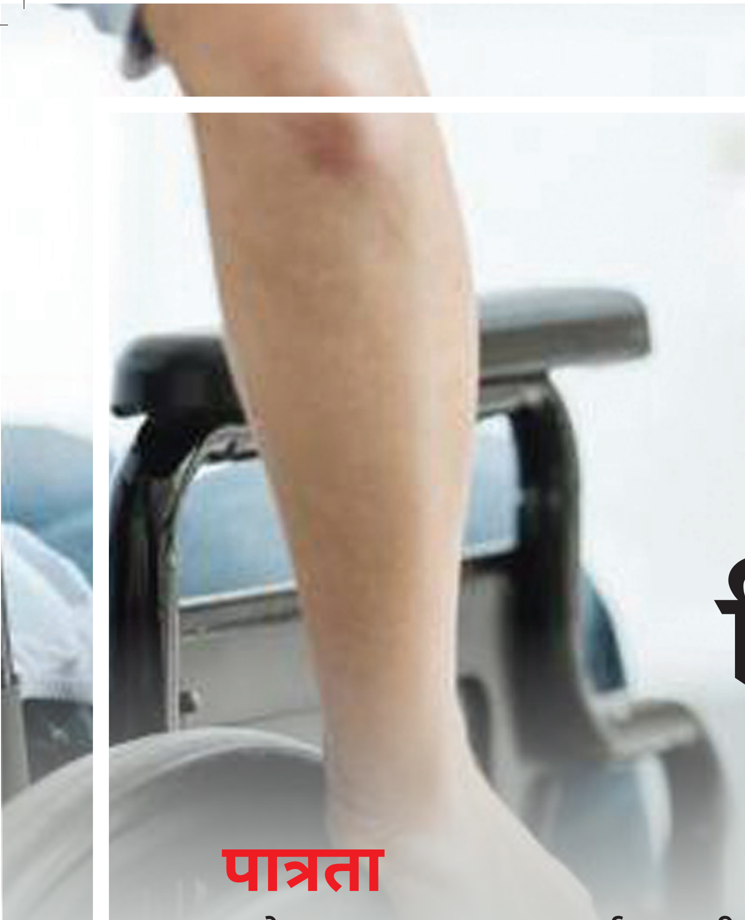

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

संपादकीय

क्यों डरें जिंदगी में क्या होगा
कुछ ना होगा तो तज़रूबा होगा
हँसती आँखों में झाँक कर देखो
कोई आँसू कहीं छुपा होगा
इन दिनों ना-उम्मीद सा हूँ मैं
शायद उसने भी ये सुना होगा
देखकर तुमको सोचता हूँ मैं
क्या किसी ने तुम्हें छुआ होगा

- जावेद अख़्तर

जीवन में जीतने का सही अर्थ ये सीखना है कि कैसे खुश और संतुष्ट रहें, और भाग्यवश ये करने के तरीके हैं! एक सफल व्यक्ति अपना सबसे बड़ा आलोचक होता है। जीवन में आगे बढ़ने के लिए आलोचना का महत्वपूर्ण योगदान भी है लेकिन हद से ज्यादा अपनी आलोचना आपको निराशा, नकारात्मकता और उदासी का शिकार बना देती है। इसलिए अपने अंदर के आलोचक को खुद पर हावी ना होने दें।आलोचना सुनकर आप अपनी कमियां समझ पाते हैं और खुद को और अपने काम को सुधार सकते हैं।

रब से है तू पूछता, किस्मत में तेरे है क्या लिखा? फ़ितरत तेरी है क्या बता, जो किस्मत करेगी फैसला। क़ुदरत ने सबको है दिया, ज़िन्दगी का कारवां। कुछ जीए कुछ मरे, बाकी चले रोते हुए। क्या मिला मुझे क्या मिला, किस्मत है मेरी क्यों ख़फ़ा? अरे! किस्मत तो तूने खुद चुना, कर्म जो किए चला। नेक हुए तो खालसा, जो न हुए तो ज़लज़ला। जीवन का यही है फ़लसफ़ा, वो तर गया जो समझ सका।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

मार्च : 2019, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 03 अंक : 27

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

079 26405200

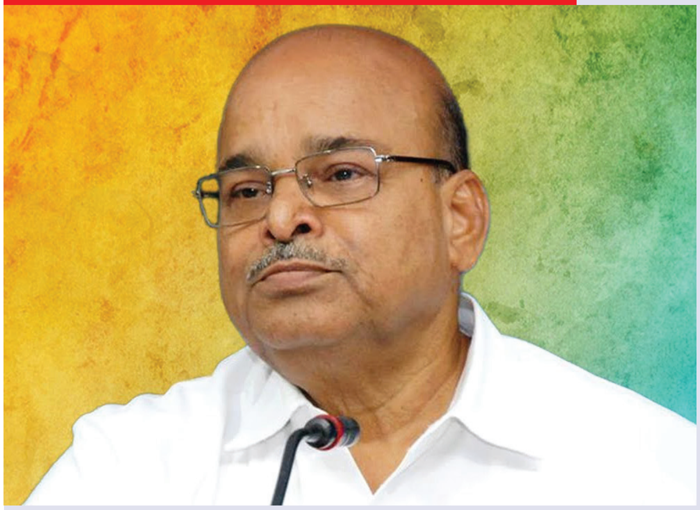

थावरचंद गहलोत,
सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्रालय,
भारत सरकार

गुजरात के दिव्यांग सशक्तिकरण विभाग ने बनाया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

केंद्रीय मंत्री थावरचंद गहलोत ने शुक्रवार को कहा कि, दिव्यांग सशक्तीकरण विभाग ने गुजरात के भरूच में 260 लोगों को आठ घंटे के अंदर आधुनिक कृत्रिम अंग लगाकर सातवां गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के तहत आने वाले विभाग ने पहले अन्य श्रेणियों में छह गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाए हैं। यह नया रिकॉर्ड बृहस्पतिवार को बनाया गया। गहलोत ने दीनदयाल दिव्यांग पुनर्वास योजना पर राष्ट्रीय अधिवेशन के उद्घाटन समारोह में कहा कि विभाग के लिए और हमारे देश के सभी दिव्यांगजन के लिए यह बहुत गौरवपूर्ण क्षण है। दुनिया भर के करीब 600 प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया।

Omkar Foundation Trust is hiring!

Vacancy : *Project Co-ordinator*
Salary : *No bar (Your excellence level = Salary you deserve)*

Send your CV's on ***info@karmainfrastructure.com***

Requirements:

- Bachelor degree in business or related field of study.
- Three years experience in related field.
- Exceptional verbal, written and presentation skills.
- Ability to work effectively both independently and as part of a team.
- Experience using computers for a variety of tasks.
- Knowledge file management, transcription, translation and other administrative procedures.
- Ability to work on tight deadlines.
- Candidate should know the literature & interest in reading.

सोलो अटलांटिक चैलेंज : 18 साल के लुकास ने अकेले अटलांटिक महासागर को पार किया

लुकास ने 4800 किमी की दूरी 59 दिन, 8 घंटे 22 मिनट में ख़त्म की

ब्रिटेन के रोअर लुकास हेट्ज़मन ने अकेले अटलांटिक महासागर पार करने का चैलेंज पूरा किया। 18 साल के लुकास ने इस चैलेंज में दो वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाए।

1) वे अकेले किसी महासागर को पार करने वाले सबसे युवा रोअर बने।

2) उन्होंने यह चैलेंज सबसे कम समय में पूरा करने का रिकॉर्ड बनाया।

लुकास ने 4800 किमी की दूरी 59 दिन, 8 घंटे 22 मिनट में रोइंग कर पूरी की। लुकास ने हर दिन लगभग 12 से 14 घंटे बिना रुके रोइंग की। लुकास ने केनेरी आइलैंड (स्पेन) से दिसंबर में रोइंग शुरू की थी। यह शनिवार को एंटीगा के इंग्लिश हार्बर में खत्म हुई। ब्रिटिश-इटैलियन-ऑस्ट्रियन मूल के लुकास का रेस के दौरान 10 किलो वजन कम हो गया था। लुकास अटलांटिक महासागर को अकेले पार करने वाले पहले ऑस्ट्रियन भी हैं। उनके पिता ऑस्ट्रिया से हैं और मां इटली से। उन्होंने बताया कि,

मुझे डिस्लेक्सिया है। यह रेस पूरी करने के बाद मुझे उम्मीद है कि मैं लोगों को इंस्पायर कर सकता हूं। मैं सिर्फ कहना चाहता हूं कि कोई भी व्यक्ति किसी भी उम्र में कोई भी चैलेंज पूरा कर सकता है। हम जितना सोचते हैं, उससे ज्यादा काम करने की ताकत हमारे अंदर होती है।

लुकास ने यह चैलेंज पूरा करने के लिए पढाई छोडी

लुकास ने यह चैलेंज पूरा करने के लिए एक साल पढ़ाई से ब्रेक लिया। इस दौरान उन्होंने रोइंग और सेलिंग की प्रैक्टिस की। वे पिछले 5 साल से रोइंग कर रहे हैं। लुकास बताते हैं- मुझे रेस के दौरान सबसे ज्यादा दिक्कत तब हुई, जब वोटर फिल्टर खराब हो गया। शुरुआती 10 दिन के बाद ही यह परेशानी झेलनी पड़ी। इस फिल्टर से मैं समुद्र के पानी को पीने लायक बनाता था। इसके बाद मैंने मैनुअल पंप का इस्तेमाल किया। यह बहुत थका देने वाला था। लुकास ने कहा- मैंने सैटेलाइट फोन का इस्तेमाल किया। एक महीने बाद ही मेरा म्यूजिक सिस्टम खराब हो गया। कुछ दिन तो काफी अकेलापन महसूस हुआ। लेकिन फिर इसकी आदत हो गई। लुकास को डिस्लेक्सिया (मानसिक बीमारी, जिससे पढ़ने-लिखने में परेशानी होती है) है। उन्होंने इस रेस में हिस्सा लेने के लिए फंड जुटाया था।

विशेष

प्रशांत वाला

आइए हम सब 'करियर ओरिएंटेड' नहीं बल्कि 'नेशन ओरिएंटेड' बनें

हम सब बचपन से एक बात सुनते आते हें की बेटा 'करियर ओरिएंटेड' बनो, बेकार की बातों में अपना समय मत बिगाड़ो, अपना भविष्य उज्जवल बनाने के लिए अभी से महेनत करो। इस प्रकार की बहोत सारी बाते हम बचपन से सुनते आए है। आज की नई पीढ़ी के माँ-बाप तो कम्प्यूटर की तरह बचपन से ही अपने बच्चों में भी करियर का प्रोग्रामिंग करना चालू कर देते हे। 'करियर ओरिएंटेड' बनो एसा कहेने की बजाय बेटा 'नेशन ओरिएंटेड' बनो, एसा कहेते किसी माता-पिता को कभी आपने सुना हे? अपने नहीं बल्कि देश के उज्जवल भविष्य के लिए महेनत करो, एसा कहेते कभी किसी को सुना हे ?

वास्तव में बदलते समय के साथ हम सब इतने 'सेल्फ सेंटर्ड' हो गए हे की मैं और मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरी ऑफिस, मेरा धंधा, मेरा बंगला, मेरी गाड़ी बस सिर्फ मेरा, मेरा और मेरा... इस में कहीं देश की तो कोई बात ही नहीं करता। आपको जानकर हैरानी होगी की ईस्ट चाइना यूनिवर्सिटी के संलग्न चाइना की एक इंस्टिट्यूट है जिसका नाम है Institute of International and Comparative Education(IICE) उसमें Nation-Oriented Comparative Education नामक कोर्ष चलता है। इसी तरह छोटी उम्र से ही बच्चे अपने देश के प्रति अपना उत्तरदायित्व समजे इस हेतु से इजराएल जैसे कई देशों की स्कूल्स में उस प्रकार की तालीम के साथ देशभक्ति के संस्कारो का सिंचन किया जाता हे। क्योंकि वहां के लोग अच्छी तरह समजते है की देश की समृद्धि में ही हमारी समृद्धि है.. देश के विकास में ही हमारा विकास है और देश की प्रगति में ही हमारी प्रगति है। इसी वजह से भारत के बाद आज़ाद हुए कई देश बहोत कम समय में विकास और समृध्धि में हमसे कई गुना आगे निकल गए है। भारत के साथ या तो उसके बाद आजाद हुए चीन, दक्षिण कोरिया, इंडोनेशिया, वियेतनाम, जॉर्डन, एस्टोनिया, इजराएल इत्यादि देशों की जिस तरह से प्रगति हुई है उसकी तुलना में कई सारी चीजों में हम आज भी बहोत पीछे है।

यह सभी देश इतनी तेज़ गति से प्रगति कैसे कर पाए ? इसका जवाब खोजने की कोशिष करेंगे तो पता चलेगा की वहां के लोग 'करियर ओरिएंटेड' नहीं किन्तु 'नेशन ओरिएंटेड' है। इसलिए यह सब देश हमसे आगे निकल गए। 'नेशन ओरिएंटेड' यानि क्या ? कुछ भी करने से पहले देश का विचार करना। मैं अगर यह कार्य करूँगा तो मेरे देश को इससे फायदा होगा या नुकसान ? मेरा क्या फायदा यह सोचने के बजाय देश के फायदे या गेरफायदे के बारे में सोचेंगे तो देश की प्रगति के साथ हमारी प्रगति भी निश्चित हे। हमारी क्रिकेट टीम विश्वकप में विजयी बने तो देश को फायदा हे की नुकसान? फायदा ही तो है, विश्वफलक पर क्रिकेट के क्षेत्र में देश का नाम रोशन हो यह देश गौरव की तो बात हुई। यहाँ देश के फायदे के साथ टीम के सभी प्लेयर्स को भी व्यक्तिगत रूप से लाभ प्राप्त हुआ की नहीं ? इसी तरह देश का वैज्ञानिक कोई नवीनतम अविष्कार करे और विश्वकक्षा पर गौरव प्राप्त करे तो यह देश का भी तो गौरव हुआ की नहीं ? आप किसी भी कार्य में या कोई भी क्षेत्र में प्रामाणिकता व ईमानदारी से प्रगति करते हे तो वह प्रगति सिर्फ आपकी नहीं बल्की पूरे देश की प्रगति है और देश की प्रगति में ही सभी देशवासीओं की भी प्रगति है।

अभी २६ जनवरी को भारत सरकार की ओर से भारतरत्न, पद्मश्री और पद्माविभूषण अवार्ड्स घोषित हुए। इन नामों की सूचि अगर हम देखेंगे तो पता चलता हे की इन सभी लोगों ने अपने अपने क्षेत्र में उतम कार्य किया है। अपना संपूर्ण जीवन किसी एक कार्य में, दूसरों की भलाई के लिए खपा दिया हे। तो यह कार्य भी देशकार्य ही हुआ। इन सभी लोगों ने अपना निजी स्वार्थ छोडकर समग्र समाज की उन्नति के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया तो साथ ही साथ उनकी अपनी प्रगति भी हुई और राष्ट्रनिर्माण का कार्य भी हुआ। तो यह सभी लोग किस प्रकार के लोग हे ? 'नेशन ओरिएंटेड'।

आजकल विदेश जाने की भी एक फेशन चल पड़ी है। वहां जाकर

दस मिनिट देश के लिए

पेट्रोलपंप पर नोकरी करेंगे लेकिन कमाई तो डॉलर में ही करेंगे। इस प्रकार का पागलपन सिर्फ युवानों में है ऐसा नहीं उनके माता-पिता पर भी इस पागलपन का दौरा पड़ा होता है। हमारा लड़का विदेश में पढाई करता है ऐसा रुतबा समाज में रखने के लिए भले ही बेंक से कर्ज लेना पड़े लेकिन बच्चे को विदेश तो भेजेंगे ही। हाँ अगर अनुकूलता हे तो विदेश जाना कोई बुरी बात नहीं हे। विदेश जाना चाहिए, वहां की अच्छी बातों का अनुकरण भी करना चाहिए। लेकिन कुछ सोचें समजे बिना हमारा सब कुछ बेकार और विदेश का सबकुछ अच्छा, यह सोच ठीक नहीं। पहले आप भारतीय संस्कृति और इतिहास का अभ्यास करो और उसके बाद कुछ तय करो तब तो ठीक है। लेकिन सिर्फ दूसरा गया तो में भी क्यूँ पीछे रह जाऊ यह सोचकर अंधी दौड़ लगाना हरगिज़ मुनासिब नहीं है।

इनफोसिस के फाउन्डर श्री नारायण मूर्ति को जिसने पढ़ा हे उसको पता होगा की वो विदेश में अच्छी कंपनी में तगड़े पगार से नौकरी कर रहे थे। वहां ओर आगे तरक्की करने का रास्ता भी उनके आगे साफ था। लेकिन उन्होंने सोचा की में यह काम मेरे देश में जाकर कयूं न करूँ ? मेरे देश के हज़ारो युवाओं को में रोजगारी दूंगा और मेरा देश सोफ्टवेर के क्षेत्र में विश्व में प्रथम क्रमांक पर पहुंचे इसके लिए में भारत में रहकर ही काम करूँगा। यह ठानकर वो भारत वापिस आ गए। इनफोसिस की स्थापना हुई और आज हज़ारो युवाओं को रोजगारी तो प्रदान करते हे साथ में देश को अबजो रुपये की विदेशी मूडी भी कमाकर देते है और करोड़ों रुपये का टेक्स भुगतान करके देश के प्रति अपना ऋण भी अदा करते हे।

हमारा देश आज विश्व में सबसे ज्यादा युवाओं का देश है। हमारे देश के युवा अगर 'करियर ओरिएंटेड' बनने की बजाय 'नेशन ओरिएंटेड' बनने की ठान लेंगे तो फिर इस देश को फिर से विश्वगुरु बनने से कोई रोक नहीं पायेगा। आइए हम सब अपने देश के लिए सोचें, देश के लिए काम करे और देश के लिए जीये।

भारत माता की जय।

वंदे मातरम्।

स्पर्श शाह: ईश्वर का मिडास टच

शरीर में 40 फ्रेक्चर होने के बावजूद 14 वर्षीय स्पर्श शाह लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। शारीरिक अक्षमता को दरकिनार कर स्पर्श लोगों को मोटिवेट करते रहते हैं। 'हाउ अ टीनेजर टर्न इंपासिबल टू आईएम पॉसिबल' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में स्पर्श ने कहते है कि स्टेज पर हजारों लोगों के बीच स्पीच देते हुए या गाते हुए उन्हें जरा भी डर नहीं लगता।

लोग अक्सर पूछते हैं कि आपको डर नहीं लगता? इस मौके पर मैं उन्हें यह जवाब देता हूं कि जीवन में से जब डर निकालने के लिए लोगों को प्रेरित करता हूं, तब मुझे क्यों डर लगेगा? लोगों को सकारात्मक विचारों के लिए प्रेरित करने में मुझे आनंद मिलता है। स्पर्श ने कहा, मैं तो 40 फ्रैक्चर के साथ ही पैदा हुआ था। आज भी मेरे पूरे जिस्म में 135 फ्रैक्चर हैं। मैं केवल जी ही नहीं रहा हूं, बल्कि लोगों को प्रेरित भी कर रहा हूं। कार्यक्रम में स्पर्श ने दो हिंदी और दो इंग्लिश गाने भी गाए।

इतने जगह से डैमेज हैं स्पर्श

- माथे पर स्कल्प फ्रैक्चर है, कई हड्डियां टूटी।
- दोनों हाथों में 30 से ज्यादा हड्डियां टूटी हैं।
- दोनों पैरों में 60 से ज्यादा हड्डियों में फ्रैक्चर हैं।
- रीढ़ की हड्डियां भी टूटीं। गर्दन से लेकर नीचे तक रीढ़ की हड्डी में 19 स्क्रू और दो रॉड लगे हुए हैं।
- इसी तरह स्पर्श के शरीर के कई हिस्सों में कुल मिलाकर 135 फ्रैक्चर हो चुके हैं।
- स्पर्श ने अभी तक कुल 10 गीत लिखे हैं और अधिकतर गीतों में संगीत भी खुद ने ही तैयार किया है।
- स्पर्श पिछले 7 वर्षों से भारतीय शास्त्रीय संगीत और 3 वर्षों से अमेरिकन वॉकल संगीत की शिक्षा ले रहा है।

डॉक्टर ने कहा था बस दो दिन जिंदा रहेगा

- स्पर्श के पिता हिरेन शाह ने कहा कि जब स्पर्श पैदा हुआ था तब उसके शरीर में 40 फ्रैक्चर थे। डॉक्टर ने कहा था कि स्पर्श केवल दो ही दिन जी सकेगा।

- यह सुनकर मुझ पर क्या बीती मैं ही जानता हूं। मेरे मन में सबसे पहले यह सवाल आया, 'भगवान, मेरे साथ ही ऐसा क्यों?
- लेकिन जिस तरह से आज स्पर्श ने अपना जो स्थान बनाया है, उसे देख कर मैं भगवान को शुक्रिया कहता हूं।
- उन्होंने कहा कि स्पर्श अब तक अमेरिका, कनाडा और यूरोप सहित दुनिया भर में 100 से ज्यादा लाइव परफॉर्मेंस दे चुका है। उसने कई अवार्ड्स भी हासिल किए हैं।

दादा: विदेश में भी स्पर्श रोज करता है ईश्वर की पूजा

- द सदर्न चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के पूर्व अध्यक्ष रह चुके स्पर्श के दादा प्रफुल शाह ने कहा कि यहां हम भारत में रहते हुए भी पूजा के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं, पर विदेश में रहते हुए भी स्पर्श ने भारतीय संस्कृति और मूल्यों को आगे बढ़ाया है।
- स्पर्श मंत्रोच्चार के साथ रोजाना भगवान की पूजा करता है। वह चैरिटी के लिए स्टेज लाइव परफॉर्मेंस करता है।
- स्पर्श बहोत सारे सेलेब्रिटीज, स्पोर्ट्स पर्सन और म्यूज़िक से ताल्लुक रखनेवाले लोगों से मिलता रहता है और पूरा दिन एक्टिव रहता है, कभी कभी हम सोचते है कि स्पर्श के अन्दर यह एनर्जी कहाँ से आती है?

वॉइस टू दिव्यांग

पीएम मोदी ने दिव्यांगों को लगाया गले, साथ में ली सेल्फी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंगलवार को अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी के 17 वें दौरे पर थे। पीएम मोदी औढ़े गांव में जनसभा को संबोधित करने के बाद दिव्यांगों से मिले और उनके साथ सेल्फी भी लिया। इस दौरान दिव्यांग पीएम मोदी से मिलकर बेहद खुश नजर आए।

बनारस में पीएम के सामने ही एक दिव्यांग ने की उनकी मिमिक्री, मोदी ने कहा- वाह

संसदीय क्षेत्र वाराणसी पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ एक रोचक घटना हुई। प्रधानमंत्री दिव्यांगों से मुलाकात कर रहे थे। इस दौरान एक दिव्यांग अभय कुमार शर्मा ने प्रधानमंत्री से उन्हीं के अंदाज में बाद की। इससे खुश प्रधानमंत्री ने उनसे पूछा क्या करते हो? जवाब मिला- स्टैंप अप कॉमेडियन और मिमिक्री आर्टिस्ट। इस पर प्रधानमंत्री ने पूछा किस-किस की मिमिक्री करते हो? अभय ने कहा- आपकी और राजनाथ सिंह की। इस पर प्रधानमंत्री ने अपनी ही मिमिक्री करने को कहा।

हूबहू अंदाज में निकाली आवाजः अभय ने जब हूबहू उन्हीं के अंदाज में आवाज निकाली तो प्रधानमंत्री भी हंस पड़े। इसके बाद प्रधानमंत्री तारीफ करते हुए कहा- 'वाह! बढ़िया।'

प्रधानमंत्री ने इसलिए सुनी लड़के की बात

मोदी डीएलडब्लू मैदान में बीएचयू स्टूडेंट परितोष वर्मा से मिले तो गले लगा लिया। दरअसल, परितोष ने बताया वो दो बार 2017 और 2018 में मेडीकल टेस्ट Neet क्वालीफाई कर चुका है। दोनों बार दिल्ली सफदरजंग हॉस्पिटल में मेडीकल काउंसिल ऑफ इंडिया की कमेटी ने उसे 90 परसेंट दिव्यांग घोषित कर एडमिशन नहीं लेने दिया। परितोष ने जब से बात पीएम को बताई और पूछा, दिव्यांग डॉक्टर नहीं बन सकता क्या ? इस पर मोदी ने अपने पीए को उसकी डीटेल्स नोट करने को कहा। परितोष ने इसके बाद मोदी को कविता भी सुनाई। परितोष बीएचयू में बीएसी फर्स्ट ईयर का स्टूडेंट है।

प्रधानमंत्रीजी दिव्यांगजन के साथ सेल्फी लेते हुए

वॉइस टू दिव्यांग

दीपाबहन संघवी: एक प्रेरणाज्योत

दीपाबहन संघवी जैन समाज के एक अग्रिम महिला सेवा कार्यकर्ता है। समाज के अंतिम तबके के लोगों के लिए नए-नए कार्यक्रम करके उनको स्वनिर्भर के लिए वह हंमेशा तत्पर रहेती है। दिव्यांगो के प्रति उनको ख़ास लगाव और प्रीति है। दिव्यांग भी हमारे ही समाज का एक हिस्सा है यह बात दृढ करने के लिए वह दिव्यांगो के लिए उनके द्वारा बनाई गई वस्तुओ का प्रदर्शन आयोजित करने जा रही है।

दिव्यांग व्यक्तिओ द्वारा बनाई गई वस्तुओ के विविध स्टोल पुरे गुजरात में कार्यरत दिव्यांग संस्थाओ और व्यक्तिओ के लिए मेघधनुष इवेंट्स मेगा एक्जीबिशन प्रस्तुत कर रहा है। जिसमें केवल दिव्यांग व्यक्ति द्वारा निर्मित वस्तुओ का प्रदर्शन किया जाएगा।

वे कहती है, समाज में जागरूकता बढाने के लिए हम सतत प्रयत्नशील है की हर तरह की दिव्यांग व्यक्ति/संस्था एक ही छत के निचे एकत्रित होकर अपने कौशल्य का प्रदर्शन करे।

आने वाली २६-२७-२८ एप्रिल दरमियान यह प्रदर्शन 'अहमदाबाद हाट' पर आयोजित होगा। आप अपना या अपनी संस्था का स्टोल नि:शुल्क बुक करने के लिए आज ही +९१ ९३७७८२९४९८ पर संपर्क कर सकते है।

तो आइए, हम सब एकत्रित होकर प्रकृति के पड़कार सामान यह दिव्यांगता को चुनौती देते है और समाज में छिपी शक्तियों से समाज को वाकिफ करे के 'हम किसी से कम नहीं'। दिव्यांग बच्चों की यह कलाकृतियों को सराहने हेतु आप नीचे दिए गए मेघधनुष ट्रस्ट के एकाउंट में आप डोनेशन दे सकते हैं।

Meghdhanush trust
State Bank of India
A/C No.: 38273912492
ISFC : SBIN0004423

रचना फाउण्डेशन द्वारा दिव्यांग आई.डी. कार्ड वितरण समारोह

दिनांक १-२-२०१९ के दिन दिव्यांग लोगों के लिए कार्यरत 'रचना फाउन्डेशन पालिताणा' द्वारा समग्र वर्ष दरमियान की गई अलग-अलग रचनात्मक काम का अहेवाल विमोचन एवं केन्द्र सरकार द्वारा दिए जाने वाले नई तरह के आई.डी.कार्ड का विमोचन एवं वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार द्वारा दिव्यांगो के लिए जारी की गई योजनाओ की जानकारी तथा दिव्यांग लाभार्थियो को उपयुक्त समय पर सहाय मिले उसके लिए उनको मार्गदर्शन भी दिया गया। कार्यक्रम में भावनगर के जिल्ला समाज सुरक्षा अधिकारी श्रीमती वैशालीबहेन जोषी, मंत्री श्री प्रवीनभाई गढ़वी, पालिताणा नगरपालिका चेयरमेन श्री ओमदेवसिंह सरवैया, पालिताणा विश्व हिन्दू परिषद के प्रमुख श्री किरीटभाई लकुम, भावनगर जिल्ला अंतर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष श्री भरतभाई राठोड़, नागरिक शराफी मंडली के उपप्रमुख श्री रमेशभाई राठोड़ एवं डायरेक्टर श्री मनोजभाई देसाई, रामीमाली ट्रस्ट के उपप्रमुख और भावनगर जिल्ला पंचायत शिक्षण समिति के सदस्य श्री प्रतापभाई मकवाणा एवं ट्रस्टीश्री जयंतीभाई बारड, पालीताणा नगरपालिका के पूर्व प्रमुखश्री हेमाबेन कडेल एवं भावनगर जिल्ला के पत्रकार मित्र उपस्थित रहे थे। समग्र कार्यक्रम का संचालन बलवंतभाई मकवाणा द्वारा किया गया था। कार्यक्रम में काफी मात्रा में दिव्यांग भाई-बहेन उपस्थित रहे थे और इसी तरह संस्था के प्रमुखश्री एवं ट्रस्टीगण को साथ में रखते हुए कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

गुजरात का एक दिव्यांग किसान - जिसने अपने गांव की किस्मत बदल दी

अनार की खेती का जादूगर

जिंदगी में हर किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता। लेकिन हिम्मत हो, तो इंसान अपनी किस्मत खुद लिखता है। गुजरात के गेनाभाई दर्गाभाई पटेल ऐसी ही एक शख्सियत हैं, जन्होंने नसीब को कोसने की बजाय खुद के बूते अपनी और अपने गांव के किसानों की जिंदगी बदल दी।

पढ़ाई की, क्योंकि खेती में हाथ नहीं बंटा सकते थे

गेनाभाई एक किसान परिवार से ताल्लुक रखते हैं। उनके पिता भी खेती करते थे। बचपन से ही गेनाभाई पोलियोग्रस्त हैं। उनके दोनों पैर नाकाम हैं। माता-पिता दोनों अशिक्षित थे, लेकिन भाई-बहनों में सबसे छोटे गेनाभाई को उन्होंने पढ़ाई पूरी करने का मौका दिया। वो भी इसलिए कि वह अपने बाकी भाई-बहनों की तरह खेती में माता-पिता का हाथ नहीं बंटा सकते थे।

पढ़ाई पूरी की, खेती से जुड़ने की सोची

गेनाभाई को घर यानी गुजरात के बनासकांठा जिले के सरकारी गोलिया गांव से 30 किलोमीटर दूर एक हॉस्टल में भेज दिया गया। वहां वह अपनी तिपहिया साइकिल से स्कूल जाते थे। 12वीं तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद गेनाभाई गांव लौट आए। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि वह अब आगे क्या करेंगे। लेकिन गेनाभाई के मन में कुछ और ही चल रहा था। वह भी भाई-बहनों की तरह खेती में माता-पिता का हाथ बंटाना चाहते थे। लेकिन दिव्यांग होने के कारण वह कुछ करने में असमर्थ थे। लेकिन तभी उन्हें समझ आया कि वह ट्रैक्टर चलाना सीख सकते हैं।

ट्रैक्टर ड्राइवर बने, खेती को लेकर शुरू की रिसर्च

गेनाभाई कुछ समय में ही एक अच्छे ट्रैक्टर ड्राइवर बन गए। उनके पिता और गांव के बाकी किसान सभी पारंपरिक फसल उगाया करते थे। लेकिन गांव में सिंचाई की थोड़ी समस्या थी। किसान बोरवेल की मदद से सिंचाई करते थे। लेकिन पानी की बहुत बर्बादी होती थी। ऊपर से पूरे साल किसानों में खेत में समय देना पड़ता था। लेकिन गेनाभाई कुछ ऐसा उगाना चाहते थे, जिससे आमदनी बढ़े और एक बार बुआई करने के बाद लंबे समय तक उपज मिले।

तय किया, अनार की खेती करेंगे

गेनाभाई ने अपनी रिसर्च शुरू की। पहले आम के पेड़ लगाने की सोची। लेकिन बदलते मौसम ने उन्हें सचेत कर दिया। गेनाभाई ने स्थानीय कृषि

अधिकारी से संपर्क किया। कृषि विश्वविद्यालय का दौरा किया और सरकार के कृषि मेले में भी गए। गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र के कई दौरों के बाद गेनाभाई ने तय किया कि वह अनार की खेती करेंगे। उन्होंने महाराष्ट्र में इसकी खेती देखी थी।

महाराष्ट्र से लेकर आए 18000 पौधे

साल 2004 की बात है। गेनाभई महाराष्ट्र से 18,000 अनार के पौधे लेकर आए। भाई-बहनों से मदद मांगी और खेतों में अनार बो दिए। गांव के दूसरे किसानों को यह समझ नहीं आ रहा था, क्योंकि किसी ने इससे पहले कभी अनार की खेती नहीं की थी। लोग उन पर हंस रहे थे। कुछ ने कहा कि उनका दिमाग फिर गया है।

दो साल बाद फल में बदलने लगे फूल

साल बदला, समय बदला। दो साल के बाद गेनाभाई ने खुद को सही साबित कर दिया। 2007 में इनके पौधों में फल आने लगे। उनकी सफलता देखकर दूसरे किसानों ने भी अनार लगाना शुरू कर दिया। लेकिन फलों को बेचना सबसे बड़ी चुनौती थी। गेनाभाई ने अनार उगाने वाले सभी किसानों को बनासकांठा में इकट्ठा किया और ट्रकों में अनार लादकर, जयपुर और दिल्ली के बाजारों में बेचने की व्यवस्था की। हालांकि, यह तरीका ज्यादा दिन नहीं चल पाया।

दूर देशों में निर्यात और पद्म सम्मान

गेनाभाई के गांव के लोग अब अपने अनार की फसल दुबई, श्रीलंका और बांग्लादेश तक निर्यात करते हैं। खुद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी गेनाभाई के परिश्रम को प्रणाम किया। उन्होंने अपने भाषण में गेनाभाई का जिक्र किया। गेनाभाई को अभी तक 18 से भी अधिक राज्य-स्तरीय पुरस्कार और कई राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। 2017 में उन्हें पद्मश्री सम्मान भी दिया गया।

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

२६ जनवरी को ॐकार दिव्यांग ट्रेनिंग डे-केर सेन्टर में दिव्यांग बच्चोंने ध्वजवंदन किया

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट संचालित ॐकार दिव्यांग ट्रेनिंग डे केर सेन्टर के मानसिक क्षतिग्रस्त तालीमार्थी बच्चों द्वारा प्रजासत्ताक दिन के उत्सव के भागरूप अगले दिन यानि की २५/१/२०१९ को संस्था के बच्चे, उनके माता-पिता एवं संस्था के स्टाफ ने मिलकर ध्वज के साथ मार्च करके उत्सव मनाया।